International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-09-2021, Accepted: 22-09-2021, Published: 06-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 76-78

अमृतलाल नागर का ऐतिहासिक उपन्यासः एक परिशीलन

डॉ. धनेश्वरी दुबे
सहायक प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), शासकीय इंजीनियर विश्वेश्वरैया स्नाकोत्तर महाविद्यालय कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
अमृतलाल नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का ऐतिहासिक पक्ष अत्यंत सशक्त है। प्रत्येक उपन्यास भारतीय इतिहास के भिन्न–भिन्न कॉल खंडो का परिचय पाठकों को देता है। नागर जी ने अपने उपन्यासों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन भारत तक के इतिहास के महत्वपूर्ण पक्षों को दर्शाया है। कुछ उपन्यासों में घटनाएं ऐतिहासिक है तो कुछ मे पात्र और कुछ उपन्यासों में वातावरण ऐतिहासिक है। एक ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में नागर जी का सर्वोत्कृष्ट स्थान है।

मूलशब्दः समानुपातिक, सिलपट्ट, खींचतान, चौतन्य, अभय, काफिर, अवधूत, सख्य भक्ति आदिद्य

प्रस्तावना
उपन्यास हिन्दी साहित्य की अन्य गध विधाओं में सबसे लोकप्रिय विधा है। उपन्यास मानव समाज के वास्तविक जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों एवं सामाजिक जीवन मूल्यों को स्पर्श करके उच्च जीवनादर्शों को अभिव्यक्त करता है। दरअसल उसका एक कारण यह है कि उपन्यासकार भी अंततोगत्त्वा समाज का ही एक अति संवेदन शील अंग है। अतः वह सामज में व्याप्त विदुपताओं, मान्यताओं, रुढ़ियों एवं मानव जीवन को स्पर्श करने वाली समास्याओं को अपने लेखन का विषय बनाता है। जब तक वह जीवन के संघर्षों और परिस्थितियों से गुजरता नहीं, तब तक वह उपन्यास का सर्जन नहीं कर सकता अर्थात प्रत्येक युग में उपन्यासकार युगीन चेतना के ताने बाने से जुड़ा रहता है। उन तारों की बुनावट एवं झनझनाहट से प्रभवित होकर बाद में वह जीवन की ऐसी तस्वीर का निर्माण करता है, जो कलात्मक रोचक एवं यथार्थ होती है।

ऐतिहासिक उपन्यासः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप
ऐतिहासिक उपन्यास दो शब्दों के योग से बना है– इतिहास+उपन्यास। अर्थात जिस उपन्यास में इतिहास है, वह ऐतिहासिक उपन्यास कहा जायेगा। साधारणतः ऐसे उपन्यासो में अतीतकालीन पात्र, वातावरण और घटनाओं के ज्ञात तथ्यों को कल्पना से माँसल और जीवन्त बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है। इन उपन्यासों का प्राण ऐतिहासिक वातावरण होता है। जितनी कुशलता के साथ उपन्यासकार अपने उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण की अभिसृष्टि कर सकें, उतना ही अधिक प्रभावशाली वह ऐतिहासिक उपन्यास होगा। यह नितान्त सत्य है कि उपन्यास इतिहास नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यास का अर्थ और स्वरुप को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों की परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

गोपीनाथ तिवारी के अनुसार
''जब इतिहास और कल्पना का संतुलित मिश्रण हुआ हो, जब खोजपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन एवं मनोरम कल्पना को एक आसन पर खड़ा करके पाणिग्रहण कराया गया हो तब हमें संतुलित उपन्यास देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है।''[1]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार
''साधारणतः ऐसे उपन्यास जिसमें अतीतकालीन पात्र, वातावरण और घटनाओं के ज्ञानतथ्यों को कल्पना से माँसल और जीवन्त बनाकर रखने का प्रयास होता है, ऐतिहासिक उपन्यास कहते हैं।''[2]

श्री वृन्दावन लाल वर्मा के अनुसार
''ऐतिहासिक उपन्यास में उपन्यासकार को इतिहास की घटनाओं को तोड़ने–मरोड़ने का हक नहीं है।उपन्यास की रुपरेखा, रीति–रिवाज, सामाजिक चित्रण, व्यक्तिगत चरित्र आदि पूर्ण एवं समानुपातिक हों। साथ ही वह सदभावों के उद्रेक करने में सफल हो, उसमें कुछ आधुनिक समस्याएँ भी हों। तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वे सुश्रंखलित हों। ऐतिहासिक उपन्यास धर्म और आदर्श के प्रचारक हों। ऐतिहासिक उपन्यासों में पाठक को पकड़े रखने की शक्ति होनी चाहिए तथा पाठक इससे कुछ ज्ञान अर्जन भी करे।''[3]

इस प्रकार ऐतिहासिक उपन्यासों के संबंध में ऊपर जितनी परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, वस्तुतः उनमें कोई मौलिक भेद नहीं है। सभी विद्वानों ने यह माना है कि इसमें किसी अतीत युग की कहानी होनी चाहिए। वस्तुतः ऐतिहासिक उपन्यास आवश्यक रुप से अतीत की एक कल्पित कहानी ही होती है और जिसमें इतिहास का पुट रहता है एवं जिसमें तिथियों, घटनाओं अथवा व्यक्तियों का समावेश होता है।

अमृतलाल नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यास
अमृतलाल नागर जी का इतिहास एवं पुरातत्व के प्रति लगाव उनके साहित्य प्रेम से कम महत्वपूर्ण नहीं है। इतिहास के प्रति उनका यह लगाव किसी एक कालखंड से न होकर भारत के प्राचीन इतिहास से होता हुआ मध्ययुगीन और आधुनिक इतिहास तक पहुँचता है। इतिहास संबंधी अपने ज्ञान का उपयोग उन्होंने अपने साहित्यिक निर्माण में किया है। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की विशिष्टता वस्तुतः उनकी सजीव ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसमें पाये जाने वाले सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के चित्रण में है। यधपि नागर जी द्वारा लिखे गये ऐतिहासिक उपन्यासों की संख्या अधिक नहीं है, पर उनके लिखे ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। नागर जी द्वारा लिखे गये प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में ''शतरंज के मोहरें'',''मानस का हंस'',''खंजन नयन'',''चैतन्य महाप्रभु'' विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।

शतरंज के मोहरें

नागर जी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास शतरंज के मोहरें सन् 1957 ई. में रचित है। प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य कथानक पूर्णतः ऐतिहासिक है जिसमें उपन्यासकार ने अपनी प्रतिभा एवं इतिहास मूलक कल्पना द्वारा 1857 की क्रांति के पहले के अवध का बहुत ही यथार्थ एवं कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अवध के नवाब गाजीउद्दीन हैदर से लेकर नसीरुद्दीन हैदर के शासन काल और उसके अत्यंत करुण एवं नाटकीय निधन तक की कुछ घटनाओं का एवं तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का अत्यंत सजीव एवं प्रभावशाली चित्रण हुआ है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र और प्रधान घटनाएँ पूर्ण रुप से ऐतिहासिक हैं। लेखक ने उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण की प्रमाणिकता की प्रतीक के लिए अनेक स्थलों पर काल का निश्चित उल्लेख किया है –

''नवाब वजीर गाजीउद्दीन हैदर को 19 अक्टूबर सन् 1818 ई. के दिन अवध का स्वतंत्र सम्राट घोषित कर दिया गया।''[4]

''19 अप्रेल सन् 1835 ई. के दिन शाही सेना ने बादशाह बेगम की कोठी को चारों ओर से घेर लिया।''[5]

इस उपन्यास का अन्तिम वाक्य काल सूचक है – ''यह गदर के बीस वर्ष पहले की बात है।''[6] इस प्रकार उपन्यासकार ने इतिहास को यथा–तथ्य प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में नागर जी ने तत्कालीन समाज में नवाबों की पारिवारिक स्थिति, समाज में नारी की स्थिति के साथ अंग्रेजों की बर्बरता से त्रस्त अवध की जनता का यथार्थ चित्रण किया है।

नवाब गाजीउद्दीन हैदर की पत्नी बादशाह बेगम एक विदुषी एवं अहंकारिणी महिला हैं और वह अपने पति को 'शतरंज का मोहरा' समझती हैं। बेगम और गाजीउद्दीन हैदर में खींचतान मची रहती है। जो बांदियाँ नवाबों के सम्पर्क में आती थीं, वह भी अपने को अवध का नवाब ही समझती थीं। यह एक पतनोन्मुखी संस्कृति का परिचायक है।

इस उपन्यास में नागर जी ने तत्कालीन जाति व्यवस्था, मुसलमानों का शिया एवं सुन्नी दो वर्गों में विभाजन, पीरों और सूफियों का बोलबाला, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का साम्राज्य, कृषकों एवं मजदूरों की दयनीय स्थिति एवं भिखारियों की स्थिति का यथार्थ चित्र उपस्थित किया है। इस काल में लखनऊ में ही भिखारियों की संख्या लाखों में थी, इन भिखारियों में– ''शाही महलों की बहुत बूढ़ी बांदियाँ, बूढ़ी लाचार वेश्याएं, दूर–दूर गांवों की उजड़ी शाही सिपाहियों, डाकुओं के बलात्कार स्वरुप घर बिरादरी से निकाली गई औरतें, बेसहारा वेश्याएँ भी थी।''[7]

इन परिदृश्यों के माध्यम से लेखक ने एक पतनोन्मुख समाज मानवीय संबंधों को विकृति की किन अवस्थाओं तक ले जा सकता है, इसका सजीव चित्रण इस उपन्यास में किया है।

मानस का हंस

नागर जी के एतिहासिक उपन्यासों में 'मानस का हंस' का स्थान शीर्षस्थ है। यह उपन्यास सन् 1973 ई. में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास तुलसीदास के जीवन चरित्र पर आधारित है। इस उपन्यास में लेखक ने तुलसी चरित्र के संबंध में प्रचलित किवदंतियों एवं तुलसी रचित रचनाओं मे निहित विचारों का आश्रय लिया है। उपन्यास को ऐतिहासिक रुप प्रदान करने के लिए तत्कालीन इतिहास को भी यथासम्भव आत्मसात कर दिया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दिल्ली पर हेमू का शासन तथा पानीपत के युद्ध में उसका पराजित होकर मारा जाना, काशी की भयंकर प्लेग, मंदिरों का नवनिर्माण, अयोध्या की बावरी मस्जिद तथा राम जन्मभूमि पर ताला आदि घटनाओं को इतिहास की पुस्तकों से लिया है।

उपन्यास में आये सभी छोटे–बड़े प्रसंग जैसे – बचपन में परित्यक्त बालक तुलसी का भिक्षावृत्ति पर गुजर, हनुमान के प्रति सख्य भक्ति, हनुमान के नाम पर चढ़े चढ़ावों पर दिन काटना, अंतिम दिनों में शारीरिक कष्ट, भुजारोग, एक ब्रह्म हत्यारे को भोजन देना आदि प्रसंग जनश्रुति पर आधारित है जिसका सफलतापूर्वक उपयोग कथा के निर्माण में किया गया है।

'मानस का हंस' की वस्तु–योजना की प्रधान शक्ति तुलसी काव्य के कलात्मक उपयोग की है। तुलसी के जन्म तथा पिता द्वारा परित्याग की घटना पूरी की पूरी 'कवितावली' के उत्तरकांड पर आधारित है।

प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यों के अतिरिक्त अनेक काल्पनिक प्रसंगों की भी उद्भावना हुई है। इनमें सबसे रोचक प्रसंग हैं, 'मोहनी बाई' का। यह प्रसंग काल्पनिक होते हुए भी अत्यंत मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित हुआ है। उपन्यास में तुलसीदास, रत्नावली, पं. आत्माराम, बाबा नरहरिदास, आचार्य शेष सनातन, बकरीदी काका, संत बेनी माधव, टोडरमल, नंददास, सूरदास, मेघाभगत, दीनबंधु पाठक, राजाभगत आदि ऐतिहासिक पात्र हैं।

नागर जी ने इस उपन्यास में तुलसी के समसामयिक युग के धार्मिक संघर्ष, सांप्रदायिक संकीर्णताओं को चित्रित किया है। तद्युगीन वर्णाश्रम एवं जाति–व्यवस्था को आज भी समाज में यथातथ हम देख रहे हैं। आज भारतीय समाज में कुष्ट रोग तरह पैठी है, धर्मनिरपेक्ष भारत की स्थिति एवं दशा में आधुनिकता के बावजूद कोई बदलाव नजर नहीं आता। तुलसी की यह उक्ति बड़ी सार्थक है–

''छूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूत कहौ, जुलहा कहौ कोऊ .. ।.''[8]

इसी से प्रतीत होता है कि तुलसी पर भी जाति के प्रश्न को लेकर कई आरोप लगाये गये थे। एक चमार–ब्रह्म हत्यारे को तुलसी ने भोजन क्या करवाया कि समस्त ब्राह्मण वर्ग उसके ब्राह्मणत्व पर संशय करने लगे। किसी ने तुलसी पर व्यंग्य भी कसा –

''सुना है आप जाति–पांति को नहीं मानते।''

''कैसे?''

''वर्णाश्रम धर्म को मानता हूँ, परन्तु प्रेम धर्म को वर्णाश्रम से भी ऊपर मानता हूँ।''[9]

इस प्रकार 'मानस का हंस' जीवनी परक उपन्यास होते हुए भी अपने ऐतिहासिक यथार्थ को पूर्ण रुप से प्रस्तुत करता है। पूरे उपन्यास में तुलसी का अर्न्त एवं बाह्य संघर्ष विधमान है। तत्कालीन समाज अपनी सम्पूर्ण विसंगतियों के साथ उजागर हुआ है।

खंजन नयन

अमृतलाल नागर का चर्चित उपन्यास 'खंजन नयन' जीवनीपरक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1981 ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में महाकवि सूरदास के गरिमामय जीवन की सार्थक प्रस्तुति है। इसमें सूरदास के जीवन संबंधी तथ्यों को कल्पना के सहारे इस प्रकार रचा गया है कि वे किसी भी जीवनी से बढ़कर प्रमाणिक रूप में उजागर होने लगते हैं। वास्तविकता को जानने के लिए उपन्यासकार ने सूरदास से संबंधित अनेक स्थानों की यात्राएँ की है, साहित्य और इतिहास को पढ़ा है, सूरदास की रचनाओं में गहराई से झांका है, मठो–मंदिरों से जानकारी प्राप्त की है। यहाँ तक कि 'खंजन–नयन' का अधिकांश भाग पारसौली आदि स्थानों पर बैठकर लिखा है और इस प्रकार तथ्यों को उपन्यास कला के लालित्य में ढ़ालने का

सराहनीय प्रयास किया है।

नागर जी ने 'खंजन–नयन' में सूर को जन्मांघ माना है। इसका आधार उन्होनें सूर के कथ्यों को माना है – ''बहरहाल मैंने सूर के प्रमाणनुसार ही उन्हें ''जनम कौ आंधरौ'' माना है। 'द्वै लोचन साबित नहीं तेऊ' उक्ति के अनुसार वे सिलपट्ट अंधे भी नहीं थे।''[10]

'खंजन–नयन' के सूरदास महान संगीतज्ञ और काव्य प्रतिभा के धनी होने के साथ–साथ ज्योतिष भी हैं।

सरदास के जीवन वृन्त को वास्तविक बनाने के लिए लेखक ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों का जीवन्त चित्रण किया है। उनके जन्म व विकास काल में इस देश में सिकंदर लोदी का शासन था, जो अपने हिन्दू विरोध के लिए इतिहास में कुख्यात है। उदाहरणार्थ :– ''काफिरों का काबा मथुरा और मथुरावासियों को बड़ी ओछी दृष्टि से देखता था।''[11]

सिकन्दर लोदी के राज में हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था। इस संदर्भ में सूरदास हरि को संबोधित करते हुए कहते हैं – ''हरि तुमने तो कंस को मारकर मथुरा जीत ली थी.... फिर तुम्हारी जन्म–भूमि में यह नया कंस कहाँ से आ गया? कैसे हाहाकार मचा है कल से। किसी का पति मरा, किसी का पुत्र, कितनी स्त्रियों जो कल तक भले घर की बहु बेटियां थी आज अगर यदि जी रही होंगी तो वेश्या से बुरी गति होगी। कल तक जो धनी थे वे आज भिखारी हो गए। सनाथ अनाथ हो गए।''[12]

प्रस्तुत उपन्यास में पारसौली की वाजनी शिलाऐं तथा चन्द्र सरोवर मथुरा से अयोध्या का मार्गवर्ती प्रदेश, अयोध्या में राम जी का विशाल मंदिर, रूनकता घाट पर माल भरी नावों की आवाजाही इत्यादि चित्र उस युग के उत्तर भारत के जनजीवन को साकार कर देते हैं। नागर जी ने प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक यथार्थ की रक्षा करते हुए सूर के संबंध में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही उनके चरित्र का निर्माण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है।

चैतन्य महाप्रभु

जीवनीपरक ऐतिहासिक उपन्यासों में नागर जी का यह तीसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1978 ई. में हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु के जीवनवृत्त को अपनी लेखनी का आधार बनाया है। सामान्यतः जनमानस में चैतन्य महाप्रभु का प्रतिबिम्ब लोक चैतन्य से दूर कृष्ण भक्ति में खोये हुए संत का है किन्तु नागर जी के चैतन्य अपने भक्ति आंदोलन के द्वारा लोकमानस में अभय और आनंद का मंत्र फूँकते दिखाई देते हैं। इस उपन्यास में चैतन्य महाप्रभु का जीवनवृत्त उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में ही चित्रित हुआ है। तत्कालीन बंगाल का गौड़ प्रदेश, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ महाप्रभु के व्यक्तित्व को प्रतिभा मंडित करने में सहायक सिद्ध हुआ है। तत्कालीन इतिहास और धार्मिक एवं सामाजिक परिवेश का सशक्त चित्रण इस उपन्यास को एतिहासिक उपन्यास की श्रेणी में खड़ा करता है।

उपर्युक्त उपन्यासों के साथ ही नागर जी के कुछ महत्वपूर्ण उपन्यास, जो पूर्णरूप से ऐतिहासिक नहीं हैं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। जिसका विवेचन करना भी समीचीन होगा–

सुहाग के नूपुर

नागर जी का उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' सन् 1960 ई. में रचित और दक्षिण भारत के इतिहास एवं संस्कृति से सम्बद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास महाकवि इंलगोविन रचित महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम' पर आधारित है। अतीत्कालीन पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित होने के कारण यह ऐतिहासिक उपन्यास कहा जा सकता है किन्तु प्रतिपाद्य 'वेश्या बनाम कुलवधू' जनित नारी पीड़ा ऐसा सामाजिक है कि यह जितना पुराना है उतना ही नया भी है।

साँत घूंघट वाला मुखड़ा

'साँत घूंघट वाला मुखड़ा' की रचना सन् 1968 ई. में हुई। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित नागर जी का लघु उपन्यास है। इसमें मुख्यतः अठारवीं सदी के अंग्रेजों और मुगलों के मध्य हुए संघर्ष का चित्रण हैं। स्वयं नागर जी ने इसके संबंध में लिखा है कि यह इतिहास नहीं, इतिहास प्रधान उपन्यास है।

करवट

'करवट' की रचना नागर जी ने सन् 1975 ई. में की। इस उपन्यास को एक ओर ऐतिहासिक मान सकते हैं, तो दूसरी ओर सामाजिक उपन्यास मान सकते हैं। ऐतिहासिक इसलिए कि इसमें निकट अतीत के इतिहास को उजागर किया गया है। वर्तमान समाज की विविध जीवन्त समस्याओं से जुड़े होने के कारण इसे सामाजिक उपन्यास की मान्यता दी जाती है। इस उपन्यास में सन् 1857 ई. से सन् 1905 ई. तक के समय का राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति का चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष

अमृत लाल नागर जी का ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में एक प्रसिद्ध स्थान है। ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना करना एक सहज कार्य नहीं है। इसके लिए उपन्यासकार को इतिहासकार की भाँति, विवेक से काम लेना पड़ता है। उसे अपने युग को भूलकर अतीत में पहुँचना पड़ता है और अतीत के इस अवगाहन में अपने मनोवेग से वर्तमान युग की समस्याओं को प्रतिबिंबित करना पड़ता है। नागर जी के उपन्यासो में एक ओर इतिहास और कल्पना का समन्वित रूप देखने को मिलता है तो दूसरी ओर तदयुगीन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दशा का भी यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी औपन्यासिक कृतियाँ हमें धार्मिक, सांम्प्रदायिक एवं जातिवाद से ऊपर उठकर मानवतावादी दृष्टि का अनमोल संदेश देती है।

संदर्भ संकेत

1. डॉ. गोपीनाथ तिवारी– ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार पृ. 04
2. आचार्य पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी– ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य की प्रस्तावना।
3. वृन्दावनलाल वर्मा के व्यक्तिगत नोट्स से उद्घृत
4. शतरंज के मोहरे– अमृतलाल नागर पृ. 86
5. शतरंज के मोहरे– अमृतलाल नागर पृ. 425
6. शतरंज के मोहरे– अमृतलाल नागर पृ. 434
7. शतरंज के मोहरे– अमृतलाल नागर पृ. 294
8. कवितावली– तुलसीदास
9. मानस का हंस– अमृतलाल नागर पृ. 426
10. 'भूमिका' खंजन नयन– अमृतलाल नागर पृ. 14
11. खंजन नयन– अमृत लाल नागर पृ. 10
12. खंजन नयन– अमृत लाल नागर पृ. 22